चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	5.9.22	1	1-5

रिसर्च • एचएयू ने विकसित की औषधीय फसल की उन्नत किस्म, 4 राज्यों के किसानों को होगा फायदा

मन की अशांति व श्वास रोगों को दूर करेगा चन्द्रशूर

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू में विकसित औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-4 पूरे देश में खेती को अनुमोदित की है। चंद्रशूर एक ऐसा पौधा है जो मन को तो शांत करेगा ही साथ ही श्वास सहित कई रोगों को भी जड़ से मिटा देगा।

विवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. टीआर शर्मा की अध्यक्षता वाली फसल मानक, अधिसूचना और फसल किस्म अनुमोदन केन्द्रीय उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समस्त भारत विशेषकर उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेती के लिए जारी किया गया है। प्रो. काम्बोज ने बताया इस औषधीय वनस्पति जिसको असारिया, आरिया, हलिम आदि नामों से भी जाना जाता है, को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश में व्यवसायिक स्तर पर उगाया जाता है। लेकिन चन्द्रशूर की एचएलएस-4 किस्म के विकसित होने से हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर के किसान भी इसकी खेती कर सकेंगे। उन्होंने बताया इस वनस्पति का औषधी के रूप में प्रयोग होने वाला मुख्य भाग इसका बीज है। राष्ट्रीय स्तर पर एचएलएस-4 किस्म के बीज की पैदावार 10.58 प्रतिशत जबकि उत्तरी भाग में 30.65 प्रतिशत अधिक दर्ज की गई है। इस किस्म से प्रति हैक्टेयर 306.71 किलोग्राम तेल प्राप्त होता है जोकि चन्द्रशूर की प्रचलित जी ए 1 किस्म के लगभग समान (306.82 किग्रा प्रति हैक्टेयर) है।

भारतीय कृषि अनुसंधान पत्र को सौंपे गए पत्र के साथ वीसी प्रो. कांबोज और शोध में अहम भूमिका निभाने वाले विशेषज्ञ।

इन वैज्ञानिकों ने विकसित की है यह किस्म

चन्द्रशूर की यह किस्म हकृवि के औषधीय, सगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. आईएस यादव, डॉ. जीएस दहिया, डॉ. ओपी यादव, डॉ. वीके मदान, डॉ. राजेश आर्य, डॉ. पवन कुमार, डॉ. झाबरमल सुतालिया व डॉ. वंदना की मेहनत का परिणाम है। कुलपति ने इन वैज्ञानिकों को बधाई दी और औषधीय पौधों की उन्नत प्रौद्योगिकी के विकास के लिए प्रयास जारी रखने को कहा। विशेष कार्य अधिकारी, डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य आदि उपस्थित रहे।

जानिए... चन्द्रशूर के औषधीय गुण

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने इसके औषधीय गुणों के बारे में बताया कि आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में चन्द्रशूर के बीज का टूटी हड्डी को जोड़ने, पाचन प्रणाली और मन को शांत करने, श्वास संबंधी रोगों, सूजन, मांसपेशियों के दर्द आदि में प्रयोग किया जाता है। बच्चों के शरीर के सही विकास के लिए इसके बीज का पाउडर बहुत लाभकारी होता है। इसके अतिरिक्त यह बच्चों की लंबाई बढ़ाने में भी मददगार होता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	5.9.22	2	3-5

चन्द्रशूर की उन्नत किस्म से 30 फीसद पैदावार बढ़ेगी

हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, पश्चिमी यूपी के लिए लाभकारी

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित की गई औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-4 पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिस्से में खेती के लिए जारी की गई है। इस उन्नत किस्म से किसान पहले की अपेक्षा 30 फीसद ज्यादा पैदावार प्राप्त कर सकेंगे। चन्द्रशूर के बीज पाचन प्रणाली व मन को शांत करने में लाभदायक है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), डॉ. टीआर शर्मा की अध्यक्षता वाली फसल मानक, अधिसूचना एवं फसल किस्म अनुमोदन केंद्रीय उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समस्त भारत विशेषकर उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेती के लिए जारी किया गया है। इस औषधीय वनस्पति को असारिया, आरिया, हालिम आदि नामों से भी जाना जाता है। यह फसल उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा मध्य प्रदेश में व्यावसायिक स्तर पर उगाया जाता है। वनस्पति का औषधि के रूप में प्रयोग होने वाला मुख्य भाग इसका बीज है। राष्ट्रीय स्तर पर एचएलएस-4 किस्म के बीज की पैदावार 10.58 प्रतिशत जबकि उत्तरी भाग में 30.65 प्रतिशत अधिक दर्ज की गई है। इस किस्म से प्रति हेक्टेयर 306.71 किलोग्राम तेल प्राप्त होता है।

हिसार- एचएयू में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों व अन्य अधिकारियों के साथ औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-4 को लांच करते हुए। संवाद

इन वैज्ञानिकों ने विकसित की है यह किस्म

चन्द्रशूर की यह किस्म हकृवि के औषधीय, सगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. आई.एस. यादव, डॉ. जी.एस. दहिया, डॉ. ओ.पी. यादव, डॉ. वी.के. मदान, डॉ. राजेश आर्य, डॉ. पवन कुमार, डॉ. झाबरमल सुतालिया व डॉ. वंदना की मेहनत का परिणाम है।

चन्द्रशूर के यह हैं औषधीय गुण :

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने इसके औषधीय गुणों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में चन्द्रशूर के बीज का टूटी हड्डी को जोड़ने, पाचन प्रणाली तथा मन को शांत करने, श्वास संबंधी रोगों, सूजन, मांसपेशियों के दर्द आदि में प्रयोग किया जाता है। बच्चों के शरीर के सही विकास के लिए इसके बीज का पाउडर बहुत लाभकारी होता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	5-9-22	5	6-8

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि ने विकसित की औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म

जागरण संवाददाता, हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में विकसित की गई औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-4 पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिस्से में खेती के लिए अनुमोदित की गई है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डा. टीआर शर्मा की अध्यक्षता वाली फसल मानक, अधिसूचना एवं फसल किस्म अनुमोदन केन्द्रीय उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समस्त भारत विशेषकर उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेती के लिए जारी किया गया है।

आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में चन्द्रशूर के बीज का टूटी हड्डी को जोड़ने, पाचन प्रणाली तथा मन को शांत करने, श्वास संबंधी रोगों, सूजन, मांसपेशियों के दर्द आदि में प्रयोग किया जाता है। बच्चों के शरीर के सही विकास के लिए इसके बीज का पाउडर बहुत लाभकारी होता है। इसके अतिरिक्त यह बच्चों की लंबाई बढ़ाने में भी मददगार होता है।

इन राज्यों को मिलेगा लाभ

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि इस औषधीय वनस्पति जिसको असारिया, आरिया, हालिम आदि नामों से भी जाना जाता है, को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा मध्य प्रदेश में व्यवसायिक स्तर पर उगाया जाता है। लेकिन चन्द्रशूर की एचएलएस-4 किस्म के विकसित होने से हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर के किसान भी इसकी खेती कर सकेंगे। इस मौके पर उन्होंने बताया इस वनस्पति का औषधि के रूप में प्रयोग होने वाला मुख्य भाग इसका बीज है। राष्ट्रीय स्तर पर एचएलएस-4 किस्म के बीज की पैदावार 10.58 प्रतिशत जबकि उत्तरी भाग में 30.65 प्रतिशत अधिक दर्ज की गई है। इस किस्म से प्रति हैक्टेयर 306.71 किलोग्राम तेल प्राप्त होता है जोकि चन्द्रशूर की प्रचलित जी ए 1 किस्म के लगभग समान (306.82 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर) है। इस तरह आने वाले दिनों में किसानों को इसका काफी फायदा मिलेगा।

- हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों को होगा उन्नत किस्म एचएलएस-4 से लाभ

विज्ञानिकों व अन्य अधिकारियों के साथ कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज। • पीआरओ

इन विज्ञानियों ने विकसित की है यह किस्म

चन्द्रशूर की यह किस्म हकृवि के औषधीय, सगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के विज्ञानियों डा. आइएस यादव, डा. जीएस दहिया, डा. ओपी यादव, डा. वीके मदान, डा. राजेश आर्य, डा. पवन कुमार, डा. झाबरमल सुतालिया व डा. वंदना की मेहनत का परिणाम है। कुलपति ने इन विज्ञानियों को बधाई दी और औषधीय पौधों की उन्नत प्रौद्योगिकी के विकास के लिए प्रयास जारी रखने को कहा। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी, डा. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा, मीडिया एडवाइजर डा. संदीप आर्य आदि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	5-9-22	5	1-3

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने विकसित की औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म

हरियाणा, पंजाब, हिमाचल व अन्य के किसानों को होगा लाभ : कुलपति काम्बोज

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों व अन्य अधिकारियों के साथ।

हिसार, 3 सितम्बर (विरेंद्र वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित की गई औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-4 पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिस्से में खेती के लिए अनुमोदित की गई है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. टी.आर. शर्मा की अध्यक्षता वाली फसल मानक, अधिसूचना एवं फसल किस्म अनुमोदन केन्द्रीय उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समस्त भारत विशेषकर उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेती के लिए जारी किया गया है।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि इस औषधीय वनस्पति जिसको असारिया, आरिया, हालिम आदि नामों से भी जाना जाता है, को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा मध्य प्रदेश में व्यवसायिक स्तर पर उगाया जाता है। लेकिन चन्द्रशूर की एचएलएस-4 किस्म के विकसित होने से हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर के किसान भी इसकी खेती कर सकेंगे। उन्होंने बताया इस वनस्पति का औषधी के रूप में प्रयोग होने वाला मुख्य भाग इसका बीज है। राष्ट्रीय स्तर पर एचएलएस-4 किस्म के बीज की पैदावार 10.58 प्रतिशत जबकि उत्तरी भाग में 30.65 प्रतिशत अधिक दर्ज की गई है। इस किस्म से प्रति हैक्टेयर 306.71 किलोग्राम तेल प्राप्त होता है जोकि चन्द्रशूर की प्रचलित जी ए 1 किस्म के लगभग समान (306.82 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर) है।

इन वैज्ञानिकों ने विकसित की है यह किस्म

चन्द्रशूर की यह किस्म हकृवि के औषधीय, सगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. आई.ऐस. यादव, डॉ. जी.एस. दहिया, डॉ. ओ.पी. यादव, डॉ. वी.के. मदान, डॉ. राजेश आर्य, डॉ. पवन कुमार, डॉ. झाबरमल सुतालिया व डॉ. वंदना की मेहनत का परिणाम है। कुलपति ने इन वैज्ञानिकों को बधाई दी और औषधीय पौधों की उन्नत प्रौद्योगिकी के विकास के लिए प्रयास जारी रखने को कहा। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी, डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य आदि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	5-9-22	5	5-6

वैज्ञानिकों व अन्य अधिकारियों के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

हकृवि ने विकसित की औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म

हिसार, 3 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित की गई औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-4 पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिस्से में खेती के लिए अनुमोदित की गई है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. टी.आर. शर्मा की अध्यक्षता वाली फसल मानक, अधिसूचना एवं फसल किस्म अनुमोदन केन्द्रीय उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समस्त भारत विशेषकर उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेती के लिए जारी किया गया है।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि इस औषधीय वनस्पति, जिसको असारिया, आरिया, हालिम आदि नामों से भी जाना जाता है, को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा मध्य प्रदेश में व्यावसायिक स्तर पर उगाया जाता है। इस वनस्पति का औषधि के रूप में प्रयोग होने वाला मुख्य भाग इसका बीज है। राष्ट्रीय स्तर पर एच.एल.एस.-4 किस्म के बीज की पैदावार 10.58 प्रतिशत, जबकि उत्तरी भाग में 30.65 प्रतिशत अधिक दर्ज की गई है। इस किस्म से प्रति हैक्टेयर 306.71 किलोग्राम तेल प्राप्त होता है, जोकि चन्द्रशूर की प्रचलित जी-ए-1 किस्म के लगभग समान (306.82 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर) है।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने इसके औषधीय गुणों के बारे में बताया कि आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में चन्द्रशूर के बीज का टूटी हड्डी को जोड़ने, पाचन प्रणाली तथा मन को शांत करने, श्वास संबंधी रोगों, सूजन, मांसपेशियों के दर्द आदि में प्रयोग किया जाता है।

उन्होंने बताया कि चन्द्रशूर की यह किस्म हकृवि के औषधीय, सगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. आई.एस. यादव, डॉ. जी.एस. दहिया, डॉ. ओ.पी. यादव, डॉ. वी.के. मदान, डॉ. राजेश आर्य, डॉ. पवन कुमार, डॉ. झाबरमल सुतालिया व डॉ. वंदना की मेहनत का परिणाम है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	5-9-22	3	1-4

सफलता **पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिस्से में खेती के लिए अनुमोदित की किस्म**

हकृवि ने विकसित की औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म

हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, जम्मू-कश्मीर व पश्चिमी यूपी के किसानों को होगा लाभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित की गई औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-4 पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिस्से में खेती के लिए अनुमोदित की गई है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. टीआर शर्मा की अध्यक्षता वाली फसल मानक, अधिसूचना एवं फसल किस्म अनुमोदन केन्द्रीय उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समस्त भारत विशेषकर उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेती के लिए जारी किया गया है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि औषधीय वनस्पति जिसको असारिया, आरिया, हालिम आदि नामों से भी जाना जाता है, को यूपी, राजस्थान, गुजरात तथा एमपी में व्यवसायिक स्तर पर उगाया जाता है। लेकिन चन्द्रशूर की एचएलएस-4 किस्म के विकसित होने से हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर के किसान भी इसकी खेती कर सकेंगे।

बीज पाउडर लाभकारी

निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने औषधीय गुणों के बारे में बताया कि आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में चन्द्रशूर के बीज का टूटी हड्डी को जोड़ने, पाचन प्रणाली तथा मन को शांत करने, श्वास संबंधी रोगों, सूजन, मांसपेशियों के दर्द आदि में प्रयोग किया जाता है। बच्चों के शरीर के सही विकास के लिए इसके बीज का पाउडर बहुत लाभकारी होता है। इसके अतिरिक्त यह बच्चों की लंबाई बढ़ाने में भी मददगार होता है।

इन वैज्ञानिकों ने विकसित की किस्म

चन्द्रशूर की यह किस्म हकृवि के औषधीय, सगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. आई.एस. यादव, डॉ. जी.एस. दहिया, डॉ. ओ.पी. यादव, डॉ. वी.के. मदान, डॉ. राजेश आर्य, डॉ. पवन कुमार, डॉ. झाबरमल सुतालिया व डॉ. चंदना की मेहनत का परिणाम है। कुलपति ने इन वैज्ञानिकों को बधाई दी और औषधीय पौधों की उन्नत प्रौद्योगिकी के विकास के लिए प्रयास जारी रखने को कहा। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी डॉ. अतुल ढींगड़ा, अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य आदि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	5-9-22	5	1-5

हरियाणा में चारे का प्रबंधन करेगा नया फोडर प्लान, चारे के लिए होगा बैंक

वैभव शर्मा • हिसार

हरियाणा के पास जल्द ही अपने पशुओं के लिए चारे का एक विशेष प्लान होगा। जिसे फोडर प्लान कहा जाएगा। इसके लिए हरियाणा के कुछ संस्थाओं की राय के साथ मास्टर प्लान तैयार हो गया है। एक से दो माह तक फोडर प्लान को लागू भी कराया जाएगा। इसके साथ ही आगामी समय में चारे की किल्लत न हो इसके लिए चारा बैंक भी सरकार शुरू कर सकती है।

फोडर प्लान को उत्तर प्रदेश के झांसी स्थित भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान द्वारा तैयार किया जा रहा है। इस प्लान को बनाने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान में प्रोजेक्ट कोआर्डिनेटर और प्रिंसिपल साइंटिस्ट डा. अजोय रोय ने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग, राजकीय कृषि विभाग और

झांसी स्थित भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान तैयार कर रहा फोडर प्लान

पशुपालन विभाग सहित कुछ अन्य संस्थानों से रायशुमारी कर ली है। यहां तक कि उन्हें मास्टर प्लान भी दिखा दिया है।

अब भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान के विज्ञानी हरियाणा के हिसाब से चारा प्रबंधन के लिए प्लान तैयार कर रहे हैं। हरियाणा को दो अलग श्रेणियों में बांटा गया है उसी आधार पर दो प्लान तैयार होंगे।

इसमें चारे की किस्में, उनको लगाने का तरीका, वैज्ञानिक प्रबंधन, चारा देने का समय, बचे चारे का रखरखाव आदि पूरी जानकारी होगी। जिससे चारा बर्बाद भी नहीं होगा और पशुओं को भी पर्याप्त पोषण मिलेगा। वहीं चारा बैंक अगर सूखा और बाढ़ जैसी परिस्थिति के लिए होगा। यहां विज्ञानिक तरीके से चारे की फसल का प्रबंधन किया जा सकेगा।

देश में इतनी है चारे की कमी

वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है जिसके लिए जरूरी कदम उठाना बहुत आवश्यक है। एचएयू के चारा अनुभाग के विज्ञानी डा. योगेश जिंदल ने बताया कि एक किस्म को तैयार करने में 14 वर्ष का समय लगता है। हाल ही में एचएयू द्वारा तैयार चारे की कई किस्में विभिन्न राज्यों में किसानों के लिए काफी मददगार बनी हुई है।

अगले साल तक हरे चारे की दो किस्में हो सकती हैं जारी, शोध कार्य पूरा

चारे की कमी से जुड़ी समस्या को देखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के विज्ञानी अभी से ही तैयारियों में जुट गए हैं। वह ऐसी चारा की किस्मों पर कार्य कर रहे है जिनमें अधिक पैदावार हो, तापमान को झेल सके और अच्छी गुणवत्ता का बीज तैयार हो सके। इसके लिए अगले साल तक एचएयू हरे चारे में दो नई किस्में (एचजे 1513 और एचजेएच 1514) ला सकता है। यह किस्में अधिक हरा चारा उपलब्ध कराने का काम करेगी। मौजूदा समय में 550 क्विंटल चारा प्रति हेक्टेयर देने वाली फसलें है। विज्ञानी इस पैदावार को और बढ़ाने का प्रयास कर रहे है। इसके साथ ही एचजे 1513 और एचजेएच 1514 किस्म में बीमारियों से लड़ने की क्षमता भी होगी। यह हरियाणा के लिए तो उपयुक्त होगी मगर आने वाले समय में स्पष्ट हो जाएगा कि देश के किन-किन राज्यों में उसकी पैदावार ली जा सकती है।

वर्तमान में चारे की कमी को देखते हुए इस विषय पर गंभीरता से कार्य करने की आवश्यकता है। इसको लेकर एचएयू कुछ नई किस्में जल्द लाएगा। जो बीमारियों से लड़ने में, अधिक पैदावार देने में सक्षम होगी। इसके साथ ही किसान भी अच्छी किस्मों के चारा बीजों का प्रयोग करें।-

-प्रो बीआर कांबोज, कुलपति, एचएयू, हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	5.9.22	3	7-8

कृषि विशेषज्ञ की सलाह

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज

कपास में इस माह में कमी न आने दें

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। कपास में इस माह में कमी न आने दें। खाद के रूप में 2.5 प्रतिशत यूरिया व 1.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट का घोल बनाकर स्प्रे करें। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज के अनुसार इसके बाद 10 दिन के अंतराल पर दो बार पोटाशियम नाइट्रेट 1 प्रतिशत की दर से स्प्रे करें। एक तिहाई टिंडे तैयार होने के बाद कपास में सिंचाई न करें।

टिंडा गलन की रोकथाम के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़के। टिंडों की सूंडियों की रोकथाम के लिए आवश्यकता हो तो एक छिड़काव सिफारिश की गई कीटनाशक का अवश्य करें। मीलीबग के नियंत्रण के लिए परपोषी पौधों को नष्ट करें व सिफारिश की गई कीटनाशकों का छिड़काव करें। उधर, चने की फसल के लिए बीज का अभी से प्रबंध कर लें। किसी विश्वस्त बीज संस्था से संपर्क करें।

बारानी क्षेत्रों में चने की बिजाई के लिए वर्षा के पानी को एकत्रित करने के लिए इस माह आवश्यकतानुसार खेत की जुताई करें ताकि खरपतवार निकल जाएं। हर बार सुहागा लगाएं ताकि नमी बनी रहे। चने की बुवाई के लिए ट्रैक्टर चालित रीजर सीडर का प्रयोग करें। यह यंत्र बारानी और सिंचित दोनों क्षेत्रों में चने की बुवाई के लिए उपयुक्त है। बुवाई यंत्रों का ठीक से समायोजन करके रख लें ताकि बुवाई के लिए समय कोई कठिनाई न आए।

सवाल भेजें = (व्हाट्सएप नंबर) 7027781155

मौसम का पूर्वानुमान

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार प्रदेश में 5 व 6 सितंबर और 10 व 11 सितंबर को बीच-बीच में बादलवाई व कहीं कहीं हवाओं के साथ बूंदाबांदी या हल्की बारिश की संभावना है।

हेल्प लाइन

अगर आप कृषि से संबंधित कोई जानकारी देना या लेना चाहते हैं तो इस आईडी पर मेल करें और सब्जेक्ट में agro अवश्य लिखें

hsr-dakincharge@hsr.amarujala.com

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाईम्स	03.09.2022	--	--

हकृवि ने विकसित की औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज बोले, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों को होगा लाभ

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित की गई औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-4 पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिस्से में खेती के लिए अनुमोदित की गई है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. टी.आर. शर्मा की अध्यक्षता वाली फसल मानक, अधिसूचना एवं फसल किस्म अनुमोदन केन्द्रीय उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समस्त भारत विशेषकर उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेती के लिए जारी किया गया है।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि इस औषधीय वनस्पति जिसको असारिया, आरिया, हालिम आदि नामों से भी जाना जाता है, को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा मध्य प्रदेश में व्यवसायिक स्तर पर उगाया जाता है। लेकिन चन्द्रशूर की एचएलएस-4 किस्म के विकसित होने से हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर के किसान भी इसकी खेती कर सकेंगे। उन्होंने बताया इस वनस्पति का औषधी के रूप में प्रयोग होने वाला मुख्य भाग इसका बीज है। राष्ट्रीय स्तर पर एचएलएस-4 किस्म के बीज की पैदावार 10.58 प्रतिशत जबकि उत्तरी भाग में 30.65 प्रतिशत अधिक दर्ज की गई है। इस किस्म से प्रति हैक्टेयर 306.71 किलोग्राम तेल प्राप्त होता है जोकि चन्द्रशूर की प्रचलित जी ए 1 किस्म के लगभग समान (306.82 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर) है।

इन वैज्ञानिकों ने विकसित की है यह किस्म

चन्द्रशूर की यह किस्म हकृवि के औषधीय, सगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. आई.एस. यादव, डॉ. जी.एस. दहिया, डॉ. ओ.पी. यादव, डॉ. वी.के. मदान, डॉ. राजेश आर्य, डॉ. पवन कुमार, डॉ. झाबरमल सुतालिया व डॉ. बंदना की मेहनत का परिणाम है। कुलपति ने इन वैज्ञानिकों को बधाई दी और औषधीय पौधों की उन्नत प्रौद्योगिकी के विकास के लिए प्रयास जारी रखने को कहा। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी, डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य आदि उपस्थित रहे।

चन्द्रशूर के यह हैं औषधीय गुण

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने इसके औषधीय गुणों के बारे में बताया कि आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में चन्द्रशूर के बीज का टूटी हड्डी को जोड़ने, पाचन प्रणाली तथा मन को शांत करने, श्वास संबंधी रोगों, सूजन, माँसपेशियों के दर्द आदि में प्रयोग किया जाता है। बच्चों के शरीर के सही विकास के लिए इसके बीज का पाऊडर बहुत लाभकारी होता है। इसके अतिरिक्त यह बच्चों की लंबाई बढ़ाने में भी मददगार होता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	03.09.2022	--	--

चौ.च.सिहं हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने विकसित की औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म अनुमोदित

हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों को होगा लाभ : कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित की गई औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-4 पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिस्से में खेती के लिए अनुमोदित की गई है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. टी.आर. शर्मा की अध्यक्षता वाली फसल मानक, अधिसूचना एवं फसल किस्म अनुमोदन केन्द्रीय उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समस्त भारत विशेषकर उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेती के लिए जारी किया गया है। प्रो. काम्बोज ने बताया कि इस औषधीय वनस्पति जिसको असालिया, आरिया, हालिम आदि नामों से भी जाना जाता है, को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा मध्य प्रदेश में व्यावसायिक स्तर पर उगाया जाता है। लेकिन चन्द्रशूर की एचएलएस-4 किस्म के विकसित होने से हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर के किसान भी इसकी खेती कर सकेंगे। उन्होंने बताया इस वनस्पति का औषधी के रूप में प्रयोग होने वाला मुख्य भाग इसका बीज है। राष्ट्रीय स्तर पर एचएलएस-4 किस्म के बीज की पैदावार 10.58 प्रतिशत जबकि उत्तरी भाग में 30.65 प्रतिशत अधिक दर्ज की गई है। इस किस्म से प्रति हैक्टेयर 306.71 किलोग्राम तेल प्राप्त होता है जोकि चन्द्रशूर की प्रचलित जी ए 1 किस्म के लगभग समान (306.82 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर) है। चन्द्रशूर के यह है औषधीय गुण हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने इसके औषधीय गुणों के बारे में बताया कि आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में चन्द्रशूर के बीज का टूटी हड्डी को जोड़ने, पाचन प्रणाली तथा मन को शांत करने, श्वास संबंधी रोगों, सूजन, मांसपेशियों के दर्द आदि में प्रयोग किया जाता है। बच्चों के शरीर के सही विकास के लिए इसके बीज का पाउडर बहुत लाभकारी होता है। इसके अतिरिक्त यह बच्चों की लंबाई बढ़ाने में भी मददगार होता है। इन वैज्ञानिकों ने विकसित की है यह किस्म चन्द्रशूर की यह किस्म हकृवि के औषधीय, सगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. आई.एस. यादव, डॉ. जी.एस. दहिया, डॉ. ओ.पी. यादव, डॉ. वी.के. मदान, डॉ. राजेश आर्य, डॉ. पवन कुमार, डॉ. झावरमल सुतालिया व डॉ. चंदना की मेहनत का परिणाम है। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी, डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य आदि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	03.09.2022	--	--

हकृवि वैज्ञानिकों ने औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म विकसित की

नभ-छोर न्यूज ▸▸ 03 सितंबर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित की गई औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-4 पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिस्से में खेती के लिए अनुमोदित की गई है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. टीआर शर्मा की अध्यक्षता वाली फसल मानक, अधिसूचना एवं फसल किस्म अनुमोदन केन्द्रीय उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समस्त भारत विशेषकर उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेती के लिए जारी किया गया है। उन्होंने बताया कि इस औषधीय वनस्पति, जिसको असारिया, आरिया, हालिम आदि नामों से भी जाना जाता है, को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा मध्य प्रदेश में व्यवसायिक स्तर पर उगाया जाता है लेकिन चन्द्रशूर की एचएलएस-4 किस्म के विकसित होने से हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर के किसान भी इसकी खेती कर सकेंगे। उन्होंने बताया इस वनस्पति का औषधी के रूप में प्रयोग होने वाला मुख्य भाग इसका बीज है। राष्ट्रीय स्तर पर एचएलएस-4 किस्म के बीज की पैदावार 10.58 प्रतिशत जबकि उत्तरी भाग में 30.65 प्रतिशत अधिक दर्ज की गई है। इस किस्म से प्रति हैक्टेयर 306.71 किलोग्राम तेल प्राप्त होता है जोकि चन्द्रशूर की प्रचलित जीए 1 किस्म के लगभग समान (306.82 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर) है।

चन्द्रशूर के यह हैं औषधीय गुण

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने इसके औषधीय गुणों के बारे में बताया कि आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में चन्द्रशूर के बीज का टूटी हड्डी को जोड़ने, पाचन प्रणाली तथा मन को शांत करने, श्वास संबंधी रोगों, सूजन, मांसपेशियों के दर्द आदि में प्रयोग किया जाता है। बच्चों के शरीर के सही विकास के लिए इसके बीज का पाऊडर बहुत लाभकारी होता है। इसके अतिरिक्त यह बच्चों की लंबाई बढ़ाने में भी मददगार होता है।

इन वैज्ञानिकों ने विकसित की यह किस्म

चन्द्रशूर की यह किस्म हकृवि के औषधीय, सगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. आईएस यादव, डॉ. जीएस दहिया, डॉ. ओपी यादव, डॉ. वीके मदान, डॉ. राजेश आर्य, डॉ. पवन कुमार, डॉ. झाबरमल सुतालिया व डॉ. वंदना की मेहनत का परिणाम है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	03.09.2022	--	--

एचएयू ने विकसित की औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म

हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों को होगा लाभ : प्रो. काम्बोज

इन वैज्ञानिकों ने विकसित की है यह किस्म